मंगलवार

11 अगस्त 2026

● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 199
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com

Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

उफनती नदियां-'बेबस' इंसान

❑चमोली में तबाही के बीच अपनों की खोज

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। चमोली में पानी आया और अपने साथ सिर्फ पुल और गाड़ियां नहीं ले गया। वह अपने साथ उन परिवारों की नींद भी बहा ले गया, जिनके अपने अचानक लापता हो गए। सड़क बनाने वाले, पुल खड़े करने वाले और सीमा तक पहुंच का रास्ता तैयार करने वाले बीआरओ के कर्मी भी इस जलसैलाब की चपेट में आ गए।

◆कागजी दावों पर भारी पड़ रहा प्रकृति का गुस्सा
◆जलसैलाब में पुल, वाहन बहे, एक कर्मी लापता
◆सवाल राहत की तस्वीरें आ गई पर जवाब कब

पहाड़ में जब पानी अपना रास्ता बदलता है तो आदमी के बनाए रास्ते कितने कमजोर हैं, यह कुछ ही मिनटों में साफ हो जाता है। एक तरफ उफनता पानी था, दूसरी तरफ पहाड़। बीच में इंसान था, उसकी मशीनें थीं, सड़क थी और वह पुल था जिस पर भरोसा करके लोग इस दुर्गम इलाके में आवाजाही करते हैं। फिर पानी आया और पुल नहीं रहा। गाड़ियां नहीं रहीं। कुछ लोग लौटकर नहीं आए। अब प्रशासन खोज रहा है। टीमें लग रही हैं। राहत और बचाव का काम चल रहा है। तस्वीरें आएंगी। हेलीकाप्टर उड़ेंगे। अधिकारियों के बयान आएंगे। बताया जाएगा कि हालात पर नजर रखी जा रही है। लेकिन पहाड़ का सबसे बड़ा सवाल इन बयानों के बीच कहीं खो जाता है आखिर हर बार पहाड़ ही क्यों बताता है कि हमने तैयारी कितनी कम की थी?

चमोली कोई पहली बार बारिश देखने वाला इलाका नहीं है। यहां बादल फटने, अतिवृष्टि, भूस्खलन और अचानक आने वाले जलसैलाब का खतरा नया नहीं है। फिर भी हर बड़ी घटना के बाद हमारी भाषा वही रहती है अचानक, अप्रत्याशित, प्राकृतिक आपदा। प्रकृति निश्चित रूप से अपने रास्ते में किसी की अनुमति नहीं लेती। लेकिन क्या खतरे का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता? यही वह सवाल है जिसे पूछना जरूरी है। एक पुल टूटता है तो प्रशासन के कागज पर वह एक ढांचा होता है। लेकिन गांव के आदमी के लिए पुल बाजार तक पहुंच है। स्कूल जाने का रास्ता है। अस्पताल जाने का रास्ता है। रोजगार तक पहुंच है और पहाड़ में कई बार पुल का मतलब दुनिया से जुड़ा रहना होता है। इसलिए जब जलसैलाब किसी पुल को बहा ले जाता है तो उसके साथ सिर्फ निर्माण सामग्री नहीं जाती। लोगों का भरोसा भी टूटता है और जब उसी घटना में सड़क और सीमा से जुड़े काम में लगे कर्मी लापता हो जाएं, तब यह हादसा और भी गंभीर हो जाता है। उनके घरों में इस समय कोई सरकारी प्रेस नोट नहीं पढ़ा जा रहा होगा। वहां सिर्फ एक सवाल होगा कि वह वापस कब आएंगे?

हमारी आपदा पत्रकारिता की एक अजीब आदत है। पहले संख्या आती है। कितने पुल बहे? कितनी गाड़ियां बहीं? कितने लोग लापता? कितनी सड़कें बंद? फिर तस्वीरें आती हैं। फिर दौरा होता है। फिर समीक्षा बैठक होती है। फिर मुआवजे की घोषणा होती है। लेकिन कुछ दिनों बाद जब कैमरे दूसरी खबर की ओर चले जाते हैं, तब उन परिवारों का क्या होता है? जिस घर का आदमी वापस नहीं आया, वहां बारिश खत्म होने के बाद भी इंतजार खत्म नहीं होता। जिस सड़क का पुल बह गया, वहां मौसम साफ होने के बाद भी रास्ता नहीं बन जाता और जिस पहाड़ में एक हादसा हुआ, वहां अगली बारिश तक वही खतरा फिर खड़ा रहता है।

उत्तराखंड में विकास जरूरी है। सड़क चाहिए। पुल चाहिए। सुरंग चाहिए। सीमा तक बेहतर संपर्क चाहिए। गांवों को बाजार और अस्पताल से जोड़ना जरूरी है। लेकिन विकास का अर्थ पहाड़ की प्रकृति को नजरअंदाज करना नहीं हो सकता। जब पहाड़ की ढलान, नदी का प्राकृतिक बहाव, जल निकासी और भूगर्भीय स्थिति को नजरअंदाज करके निर्माण होता है, तब प्रकृति की पहली बड़ी परीक्षा में हमारी इंजीनियरिंग कटघरे में खड़ी हो जाती है। सवाल यह नहीं कि सड़क क्यों बनाई गई। सवाल यह है कि सड़क कैसे बनाई गई? सवाल यह नहीं कि पुल क्यों बनाया गया। सवाल यह है कि क्या पुल उस जलधारा और उस संभावित दबाव को ध्यान में रखकर बनाया गया था? और सबसे बड़ा सवाल क्या हमने आपदा को केवल राहत और मुआवजे का विषय बना दिया है, जबकि उसे निर्माण और योजना का विषय होना चाहिए था?

49 लाख से अधिक शिवभक्त कर चुके हैं श्री नीलकंठ महादेव के दर्शन

हमारे संवाददाता

पौड़ी। सावन मास में आयोजित प्रसिद्ध श्री नीलकंठ महादेव कांवड़ यात्रा लगभग अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। अटूट श्रद्धा और आस्था का अनुपम संगम बने इस महापर्व में 49 लाख से अधिक शिवभक्त एवं श्रद्धालु श्री नीलकंठ महादेव मंदिर में जलाभिषेक एवं दर्शन कर अपने गंतव्यक के लिए प्रस्थान कर चुके हैं।

बता दें कि आज दोपहर 12 बजे तक लगभग 3 लाख श्रद्धालुओं द्वारा मंदिर पहुंचकर जलाभिषेक एवं दर्शन किया। यात्रा के समापन की ओर अग्रसर होने के बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह और आस्था निरंतर चरम पर बनी हुई है।

शिवभक्तों/श्रद्धालुओं की इस विशाल यात्रा को सुगम, सुरक्षित, व्यवस्थित एवं निर्बाध बनाए रखने हेतु पुलिस प्रारंभ से ही पूरी तत्परता, समर्पण और पेशेवर दक्षता के साथ प्रत्येक मोर्चे पर डटी हुई है। कठिन परिस्थितियों और अत्यधिक भीड़ के दबाव के बीच भी पुलिस अधिकारी एवं जवान पूरी संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं।

दून वैली मेल

संपादकीय

लोकतंत्र की बड़ी परीक्षा

संसद के मानसून सत्र के अब केवल चार कार्य दिवस बचे हैं और सदन के भीतर कामकाज से ज्यादा शोर दिखाई दे रहा है। सरकार के पास महत्वपूर्ण विधेयकों की लंबी सूची है, विपक्ष के पास सवालों की लंबी फेहरिस्त है और जनता के पास यह देखने के अलावा फिलहाल कोई विकल्प नहीं कि उसके नाम पर चल रही संसद आखिर कितनी देर तक एक-दूसरे को सुनने के लिए तैयार होती है। महिला आरक्षण, परिसीमन और विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम यानी एफसीआरए से जुड़े प्रस्ताव महज कुछ विधेयक नहीं हैं। इनका असर आने वाले वर्षों की राजनीति, प्रतिनिधित्व, चुनावी भूगोल और नागरिक समाज के कामकाज तक पड़ सकता है। ऐसे विषयों पर संसद में व्यापक बहस होनी चाहिए। लेकिन विडंबना यह है कि इन महत्वपूर्ण सवालों के बीच संसद स्वयं संवाद के संकट में फंसी हुई है। संसदीय गतिरोध कोई नई बात नहीं है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच मतभेद लोकतंत्र का हिस्सा हैं। लेकिन मतभेद और गतिरोध में फर्क है। मतभेद लोकतंत्र को मजबूत करते हैं, जबकि लगातार गतिरोध लोकतंत्र की संस्थागत क्षमता को कमजोर करता है। संसद का काम केवल विधेयक पारित करना नहीं, बल्कि सरकार से सवाल पूछना, नीतियों की समीक्षा करना और जनता की चिंताओं को आवाज देना भी है। इसीलिए सरकार का यह कहना कि गृह मंत्री अमित शाह छात्रों से जुड़े मुद्दे पर सदन में बयान देने को तैयार हैं, महत्वपूर्ण है। लेकिन इसके साथ यह शर्त जोड़ना कि विपक्ष बाधा उत्पन्न न करे, समाधान की दिशा में आधा कदम ही है। सरकार को बयान देना है तो उसे विपक्ष को सुनने की तैयारी भी दिखानी होगी। विपक्ष को सवाल पूछने हैं तो उसे सदन को चलने देने की जिम्मेदारी भी स्वीकार करनी होगी। लोकतंत्र में संवाद कभी शर्तों पर नहीं चलता। संवाद की शुरुआत ही इस स्वीकार से होती है कि सामने वाला पक्ष भी अपनी बात रखने का अधिकार रखता है। छात्रों से जुड़े मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगना विपक्ष का अधिकार है। यदि पुलिस कार्रवाई या किसी प्रशासनिक निर्णय को लेकर सवाल उठे हैं तो उनका जवाब संसद में मिलना चाहिए। लेकिन उसी समय यह भी जरूरी है कि संसद को जवाब मांगने के मंच से जवाब सुनने के मंच में बदला जाए। यदि विपक्ष केवल नारे लगाए और सरकार केवल संख्याबल के भरोसे विधेयक पारित कराने की कोशिश करे, तो दोनों ही संसद की मूल भावना से दूर जा रहे होंगे। सबसे बड़ा सवाल महिला आरक्षण और परिसीमन को लेकर है। महिला आरक्षण का मुद्दा आधी आबादी के राजनीतिक प्रतिनिधित्व से जुड़ा है। परिसीमन देश के चुनावी नक्शे और प्रतिनिधित्व की संरचना को प्रभावित कर सकता है। ऐसे विषयों पर जल्दबाजी में राजनीतिक सहमति का दावा करना उतना ही गलत होगा, जितना अनिश्चितकाल तक चर्चा को रोक देना। परिसीमन का सवाल विशेष रूप से संवेदनशील है क्योंकि इसमें राज्यों के बीच प्रतिनिधित्व, जनसंख्या और संघीय संतुलन जैसे प्रश्न जुड़े हैं। दक्षिणी राज्यों की चिंताओं को नजरअंदाज करके कोई भी बड़ा फैसला व्यापक राजनीतिक सहमति के बिना टिकाऊ नहीं हो सकता। संसद बहुमत की ताकत से कानून तो बना सकती है, लेकिन लोकतंत्र में हर कानून की राजनीतिक वैधता केवल वोटों की संख्या से तय नहीं होती। इसी तरह एफसीआरए में प्रस्तावित बदलावों पर भी संसद में खुली बहस होनी चाहिए। विदेशी धन के दुरुपयोग पर निगरानी जरूरी है, लेकिन नागरिक समाज संगठनों की स्वतंत्रता और उनके वैध कामकाज को लेकर उठने वाली चिंताओं का जवाब भी सरकार को देना होगा। सुरक्षा और पारदर्शिता के नाम पर नियंत्रण बढ़ाना आसान है, चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि नियंत्रण और स्वतंत्रता के बीच लोकतांत्रिक संतुलन बना रहे। विडंबना देखिए कि संसद के पास इन सभी सवालों पर चर्चा के लिए समय कम है और राजनीतिक अविश्वास बढ़ता जा रहा है। चार दिन में बहुत कुछ हो सकता है, लेकिन तभी जब सरकार और विपक्ष दोनों यह समझें कि संसद चुनावी अखाड़ा नहीं, संवैधानिक संस्था है। सरकार को अपनी विधायी प्राथमिकताओं पर विपक्ष से बातचीत करनी चाहिए। विपक्ष को भी यह तय करना होगा कि सदन को रोकना उसकी रणनीति का स्थायी विकल्प नहीं हो सकता। सरकार जवाब दे, विपक्ष सवाल पूछे और फिर सदन निर्णय करे यही संसदीय लोकतंत्र का सामान्य रास्ता है। आज जरूरत इस बात की नहीं है कि कौन संसद में ज्यादा देर तक नारे लगाता है। जरूरत इस बात की है कि कौन जनता के सवालों को ज्यादा देर तक संसद के भीतर जिंदा रखता है। मानसून सत्र के यह आखिरी चार दिन इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनके सामने केवल कुछ विधेयकों का भविष्य नहीं है। इनके सामने संसद की कार्यसंस्कृति का सवाल भी है। क्या सत्ता पक्ष बहुमत को संवाद का विकल्प मानेगा? क्या विपक्ष विरोध को सदन चलने देने की जिम्मेदारी के साथ संतुलित करेगा? और क्या सरकार ऐसे संवेदनशील संवैधानिक मुद्दों पर व्यापक सहमति बनाने की कोशिश करेगी? इन सवालों के जवाब आने वाले दिनों में मिलेंगे। संसद की गरिमा किसी एक दल की संपत्ति नहीं है। सरकार आज सत्ता में है, कल विपक्ष में हो सकती है। विपक्ष आज विरोध में है, कल सत्ता में आ सकता है। लेकिन संसद और लोकतंत्र दोनों इन दलों से बड़े हैं। इसलिए आखिरी चार दिनों में सबसे जरूरी विधेयक शायद कोई विधेयक नहीं, बल्कि संवाद की वह परंपरा है जिसे बचाए बिना कोई भी कानून लोकतंत्र को मजबूत नहीं कर सकता। संसद चलेगी तो बहस होगी। बहस होगी तो असहमति होगी। असहमति होगी तो रास्ता निकलेगा। संसद का रुकना किसी की जीत नहीं हैकृयह लोकतंत्र की हार है।

करोड़ों का 'ढोंग' जिंदगी 'डोली' में

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विकास की तस्वीरें बहुत सुंदर हैं। पहाड़ों पर चौड़ी सड़कें हैं, सुरंगें हैं, चारधाम के रास्ते हैं, बड़े-बड़े पुल हैं और विकास के दावों के लंबे-लंबे विज्ञापन हैं। लेकिन इसी उत्तराखंड के किसी गांव में जब कोई व्यक्ति घायल होता है तो विकास की चमक अचानक खत्म हो जाती है। एंबुलेंस सड़क तक आती है। गांव तक नहीं। फिर चार लोग आते हैं। एक डोली आती है। मरीज को उसमें लिटाया जाता है और पहाड़ के चार ग्रामीण उसे कंधों पर उठाकर कई किलोमीटर पैदल चल पड़ते हैं। यह दृश्य किसी पुराने उत्तराखंड की तस्वीर नहीं है। यह उस उत्तराखंड की तस्वीर है जो आज भी मौजूद है। जिस राज्य में चारधाम यात्रा के लिए करोड़ों रुपये के सड़क और परिवहन प्रोजेक्ट बन रहे हैं, उसी राज्य में एक ग्रामीण को अस्पताल पहुंचाने के लिए गांव के लोगों को अपना कंधा देना पड़ रहा है। सवाल यह नहीं कि डोली क्यों बनी। सवाल यह है कि डोली की जरूरत आज भी क्यों है?

मैदानी शहर में एंबुलेंस की आवाज सुनाई देती है तो लगता है कि व्यवस्था मरीज तक पहुंच रही है। पहाड़ में कई जगह एंबुलेंस की आवाज गांव तक पहुंचती ही नहीं। क्योंकि सड़क नीचे खत्म हो जाती है। इसके बाद रास्ता पगडंडी का होता है। कहीं सीढ़ियां हैं, कहीं पत्थर हैं, कहीं जंगल का रास्ता है और कहीं इतना संकरा रास्ता कि चार आदमी भी मुश्किल से चल सकें। मरीज को स्ट्रेचर पर ले जाना संभव नहीं होता तो डोली ही सहारा बनती है। परिवार के लोग जानते हैं कि अस्पताल दूर है। समय कम है और रास्ता लंबा। फिर किसी की मां, किसी के पिता, किसी की पत्नी या किसी बच्चे को चार-पांच लोग अपने कंधों पर उठाते हैं। यह सिर्फ मजबूरी नहीं। यह स्वास्थ्य व्यवस्था के सामने खड़ा एक आईना है।

उत्तराखंड की स्वास्थ्य समस्या केवल अस्पतालों की संख्या की समस्या नहीं है। यह दूरी की समस्या भी है। अस्पताल है तो कितनी दूर? सड़क है तो मरीज के घर तक है या नहीं? सड़क है तो बारिश में

◆उत्तराखंड के पहाड़ के गांवों में बदहाल हैं स्वास्थ्य सेवाएं
◆उत्तराखंड के पहाड़ में स्ट्रेचर बना है चार लोगों का कंधा
◆सड़कें कागज पर पहुंच गई, एंबुलेंस गांव तक नहीं पहुंची
◆घायल को कंधों पर उठाकर मीलों चलने को ग्रामीण मजबूर

चलती है या नहीं? एंबुलेंस है तो गांव तक पहुंचती है या नहीं? और अगर एंबुलेंस नहीं पहुंचती तो मरीज को सड़क तक कौन पहुंचाएगा? इन सवालों का जवाब किसी सरकारी भवन की दीवार पर नहीं लिखा है। इसका जवाब पहाड़ का ग्रामीण अपने कंधे पर लिखता है। वही कंधा जिस पर कभी घास की गठरी होती थी, अब उसी पर मरीज की जिंदगी रखी होती है। सरकारी रिपोर्ट में लिखा जाएगा स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। कहीं लिखा होगाकृदूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं मजबूत की गई हैं। किसी बैठक में कहा जाएगा ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी सरकार की प्राथमिकता है। लेकिन जिस दिन किसी गांव का आदमी घायल होता है, उसे इन वाक्यों की जरूरत नहीं होती। उसे डाक्टर चाहिए। उसे एंबुलेंस चाहिए। उसे सड़क चाहिए और सबसे बढ़कर उसे समय चाहिए। क्योंकि पहाड़ में अस्पताल तक पहुंचने में लगने वाला अतिरिक्त एक घंटा केवल एक घंटा नहीं होता।वह मरीज की जिंदगी और मौत के बीच का अंतर हो सकता है।

यह सवाल विकास विरोधी नहीं है। बल्कि यह विकास की गुणवत्ता का सवाल है। अगर किसी गांव तक सड़क नहीं पहुंच सकती तो कम से कम ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था क्यों नहीं है जिससे आपातकाल में मरीज को सुरक्षित और तेजी से सड़क तक पहुंचाया जा सके? अगर सड़क भूस्खलन से बंद हो जाती है तो वैकल्पिक मार्ग क्या है? क्या हर संवेदनशील गांव के लिए स्थानीय आपदा-चिकित्सा योजना है? क्या प्रशिक्षित ग्रामीण स्वयंसेवक हैं? क्या प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था है? क्या हर दूरस्थ गांव के लिए आपातकालीन संपर्क और परिवहन व्यवस्था वास्तव में काम करती है? या फिर हमारी पूरी व्यवस्था इस उम्मीद पर चल रही है कि हादसा होने से पहले कोई हादसा न हो?

उत्तराखंड के गांवों में डोली उठाने वाले लोग किसी योजना का हिस्सा नहीं होते। वह पड़ोसी होते हैं। रिश्तेदार होते हैं। दोस्त होते हैं। कभी-कभी अनजान ग्रामीण भी मदद के लिए कंधा दे देते हैं। उनके पास

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

भूमि खरीद फरोख्त भू-कानून के प्रावधानों का हो रहा दुरुपयोगः चमोली

संवाददाता

देहरादून। अधिवक्ता सेवा मंच के अध्यक्ष संदीप चमोली ने कहा कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में भूमि खरीद फरोख्त भू-कानून के प्रावधानों का दुरूपयोग हो रहा है।

आज यहां परेड ग्राउण्ड स्थित एक क्लब में पत्रकारों से वार्ता करते हुए अधिवक्ता संदीप चमोली ने उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में भूमि की खरीद-फरोख्त, भू-कानून के प्रावधानों के कथित दुरुपयोग तथा कृषि भूमि के भूखंडों में परिवर्तन कर बिक्री किए जाने के मामलों पर गंभीर चिंता व्यक्त की। वक्ताओं ने जनपद पौड़ी गढ़वाल के एराड़ी गांव में एक कम्पनी द्वारा लगभग 144 नाली भूमि की खरीद को गंभीर जांच का विषय बताया।

आरोप है कि भूमि की खरीद के समय दस्तावेजों में भूमि का प्रयोजन कृषि कार्य दर्शाया गया, जबकि रजिस्ट्री के बाद उक्त भूमि को छोटे-छोटे भूखंडों में विभाजित कर बाहरी व्यक्तियों को बेचे जाने की प्रक्रिया की जा रही है। वक्ताओं ने मांग की कि संबंधित भूमि की खरीद से लेकर वर्तमान स्थिति तक के समस्त राजस्व अभिलेखों, रजिस्ट्री दस्तावेजों, भूमि उपयोग, अनुमति, स्वीकृतियों तथा भूखंडों की बिक्री की स्वतंत्र एवं उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। पत्रकार वार्ता में यह भी आरोप लगाया गया कि संबंधित कंपनी द्वारा वर्ष 2003

से पूर्व की भूमि खरीद का आधार प्रस्तुत किया जा रहा है और देहरादून में वर्ष 1997 में संपत्ति खरीदने का दावा किया गया है।

उन्होंने कहा कि कंपनी वर्ष 1995 में गठित होने का दावा करती है, जबकि वर्तमान में कंपनी के निदेशक मंडल में शामिल व्यक्तियों के निदेशक बनने की तिथियां वर्ष 2016 के बाद की बताई जा रही हैं। ऐसे में यह भी जांच का विषय है कि 2003 से पूर्व की संपत्ति एवं कंपनी की वर्तमान संरचना के बीच वास्तविक कानूनी और स्वामित्व संबंध क्या है।

उन्होंने सरकार से मांग की कि वर्ष 2003 से पूर्व अस्तित्व में आई कंपनियों के नाम पर उत्तराखंड में खरीदी गई भूमि का जनपदवार ऑडिट कराया जाए और यह जांचा जाए कि संबंधित कंपनियां वास्तव में किस उद्देश्य से गठित हुई थीं तथा उन्होंने भूमि खरीद के बाद उसका उपयोग किस प्रकार किया। वक्ताओं ने कहा कि वर्ष 2017-18 के दौरान भू-कानून में किए गए संशोधनों तथा विशेष रूप से धारा 154 से जुड़े प्रावधानों की भी पुनः समीक्षा की आवश्यकता है। पत्रकार वार्ता में आश्रमों, होटल, वेलनेस सेंटर और पंचकर्म केंद्रों द्वारा कथित रूप से कराई जा रही बोरिंग का मुद्दा भी उठाया गया।

वक्ताओं ने कहा कि पर्वतीय क्षेत्रों में भूजल एवं प्राकृतिक जलस्रोत अत्यंत संवेदनशील हैं। यदि बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा बिना पर्याप्त नियमन के भूजल का दोहन किया जाता है तो इसका सीधा प्रभाव स्थानीय ग्रामीणों के प्राकृतिक जलस्रोतों पर पड़ सकता है। पत्रकार वार्ता में एडवोकेट संदीप चमोली, अध्यक्ष, अधिवक्ता सेवा मंच उत्तराखंड, पंकज उनियाल अध्यक्ष, पहाड़ स्वाभिमान सेना, एडवोकेट नवनीत कुकरेती, एडवोकेट हरेंद्र बेदी सामाजिक कार्यकर्ता, अनिल डोभाल, एडवोकेट विनीत मिश्रा आदि मौजूद रहे।

आपदा में देरी बर्दाश्त नहीं, सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे अधिकारी : कौशिक

पिथौरागढ़(आरएनएस)। आपदा की दृष्टि से संवेदनशील पिथौरागढ़ जिले में किसी भी आपात स्थिति के दौरान राहत व बचाव कार्य में किसी भी प्रकार की देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आपदा की सूचना मिलते ही संबंधित विभागों की टीमें तत्काल मौके पर पहुंचकर राहत व बचाव कार्य शुरू करें। सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ काम करते हुए रिस्पांस टाइम को न्यूनतम रखें। यह निर्देश कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने जिला कार्यालय सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि आपदा की स्थिति में त्वरित कार्रवाई ही जनहानि को न्यूनतम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिला कार्यालय सभागार में कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने डीडीहाट स्थित आयुर्वेद उत्कर्ष केंद्र आयुष्मान आरोग्य मंदिर का शुभारंभ किया। इसके बाद उन्होंने आपदा प्रबंधन व पुनर्वास कार्यों की समीक्षा की। मंत्री कौशिक ने कहा कि पिथौरागढ़ भौगोलिक और आपदा की दृष्टि से बेहद संवेदनशील जिला है। ऐसे में अधिकारियों को पूरी तत्परता, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना होगा। धारचूला के पूर्व ब्लॉक प्रमुख धन सिंह धामी ने कहा कि धारचूला विधानसभा क्षेत्र में कई परिवार अभी भी विस्थापन की राह देख रहे हैं,सड़कों के बार-बार बंद होने से पर्यटकों व लोगों परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कैबिनेट मंत्री ने क्षतिग्रस्त सड़कों और पेयजल लाइनों की मरम्मत का कार्य तत्काल कराने के निर्देश दिए। लंबित विस्थापन के मामलों को भी प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालयों, पंचायत भवनों और अन्य जनोपयोगी सरकारी भवनों के क्षतिग्रस्त होने पर उनकी मरम्मत व आवश्यक पुनर्निर्माण कार्य शीघ्र पूरा कराने को कहा।

चेकिंग अभियान में 163 वाहन चालकों पर कार्रवाई, एक वाहन सीज

अल्मोड़ा(आरएनएस)। जिले में कानून-व्यवस्था और यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखने के लिए अल्मोड़ा पुलिस ने व्यापक चेकिंग अभियान चलाया। कस्बों, बाजारों, प्रमुख मार्गों और पर्यटन स्थलों के साथ होटल, ढाबे व रिजॉर्ट भी पुलिस की निगरानी में रहे। अभियान के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 163 वाहन चालकों के खिलाफ एमवी एक्ट के तहत चालानी कार्रवाई की गई, जबकि एक वाहन सीज किया गया। वहीं, अराजकता फैलाने, बिना सत्यापन रह रहे बाहरी व्यक्तियों और न्यूसेंस फैलाने वाले 34 लोगों के खिलाफ पुलिस एक्ट में कार्रवाई हुई। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चंद्रशेखर घोडके के निर्देश पर थाना-चौकी प्रभारियों और यातायात पुलिस ने शनिवार को जिलेभर में सघन चेकिंग की। पुलिस टीमों ने जनपद के प्रवेश मार्गों के साथ नगर क्षेत्रों, बाजारों, चौराहों और पर्यटन स्थलों के आसपास वाहनों की जांच की। होटल, ढाबे, रिजॉर्ट और रेस्टोरेंटों में भी चेकिंग कर संदिग्ध व्यक्तियों और वाहनों पर नजर रखी गई। पुलिस ने विशेष रूप से शराब पीकर वाहन चलाने और रैश ड्राइविंग करने वालों पर निगरानी रखी। इसके साथ ही संदिग्ध गतिविधियों में शामिल लोगों, अराजक तत्वों और हुड़दंगियों पर भी पुलिस की नजर रही।

चकराता में टैक्सी संचालकों ने किया प्रदर्शन

विकासनगर (आरएनएस)। जौनसारी जनजाति हल्का वाहन वेलफेयर समिति ने चकराता क्षेत्र में पर्यटकों के निजी नंबर के वाहनों का इस्तेमाल किए जाने पर नाराजगी जताते हुए प्रदर्शन किया। समिति के पदाधिकारियों का कहना है कि बाहरी क्षेत्रों से आने वाले पर्यटक स्थानीय पंजीकृत प्राइवेट टैक्सियों का उपयोग करने के बजाय निजी नंबर की स्कूटी, कार और अन्य वाहनों को किराये पर लेकर चकराता पहुंच रहे हैं। इससे जहां स्थानीय टैक्सी संचालकों के रोजगार पर असर पड़ रहा है, वहीं सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। समिति के अध्यक्ष रणवीर सिंह राणा ने कहा कि चकराता क्षेत्र में सैकड़ों प्राइवेट टैक्सियां पंजीकृत हैं। स्थानीय टैक्सी चालक पर्यटकों को बेहतर और सुरक्षित परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम हैं। बावजूद इसके पर्यटक निजी वाहनों को प्राथमिकता दे रहे हैं जिससे स्थानीय टैक्सी संचालकों के सामने रोजगार का संकट खड़ा हो रहा है।उन्होंने कहा कि पंजीकृत प्राइवेट टैक्सियों का रिकॉर्ड परिवहन विभाग के पास दर्ज होता है। ऐसे में पर्यटकों के आवागमन की जानकारी और वाहन की पहचान आसानी से की जा सकती है। इसके विपरीत निजी नंबर के वाहनों के माध्यम से पर्यटकों के आने पर उनके आवागमन का स्पष्ट रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हो पाता। इसे क्षेत्र की सुरक्षा की दृष्टि से गंभीर विषय बताते हुए प्रशासन से आवश्यक कदम उठाने की मांग की है। समिति के उपाध्यक्ष पूरण सिंह राणा ने कहा कि पर्यटन को बढ़ावा देना जरूरी है, लेकिन इसके साथ क्षेत्र की सुरक्षा और स्थानीय लोगों के रोजगार का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

बदलते दौर में खो गई 'बुलाक' की चमक

◆सदियों की कहानी कहती एक छोटी-सी बुलाक की वह चमक
◆पहाड़ के गांवों में कभी सुहाग और समृद्धि की पहचान थी बुलाक
◆आज के फैशन के बीच लोक-संस्कृति की विरासत बचाने की चुनौती

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पहाड़ की पगडंडियों पर चलती कोई महिला जब अपने पारंपरिक परिधान में नजर आती है तो उसके माथे की बिंदी, गले का गलोबंद, कानों के कर्णफूल और नाक की बुलाककृसब मिलकर एक ऐसी तस्वीर बनाते हैं, जिसमें पहाड़ की लोकसंस्कृति सांस लेती दिखाई देती है। पहाड़ की स्त्री के श्रृंगार में बुलाक केवल सोने का एक आभूषण नहीं रही, बल्कि यह उसकी पहचान, परिवार की परंपरा और सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा रही है। आज जब पहाड़ के गांव बदल रहे हैं, पहनावा बदल रहा है और नई पीढ़ी का फैशन भी बदल रहा है, तब बुलाक की चमक कुछ कम जरूर हुई है, लेकिन उसकी कहानी अब भी उतनी ही पुरानी और खूबसूरत है।

बुलाक को देखकर पहली नजर में शायद कोई इसे नाक का साधारण आभूषण समझे, लेकिन पहाड़ के पारंपरिक श्रृंगार में इसका अपना विशेष स्थान रहा है। खासकर पहाड़ी महिलाओं के पारंपरिक आभूषणों में बुलाक का उल्लेख आते ही पुरानी पीढ़ी के सामने गांव की महिलाएं, त्योहारों के अवसर पर सजे आंगन और पारंपरिक परिधानों में सजी पहाड़ की बेटियों की तस्वीर उभर आती है। सोने या अन्य धातु से बनी बुलाक अपने आकार और डिजाइन में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग दिखाई दे सकती है। कहीं इसमें महीन नक्काशी होती है तो कहीं यह साधारण लेकिन बेहद आकर्षक डिजाइन में दिखाई देती है। यही विविधता पहाड़ के आभूषणों की खूबसूरती है।

पहाड़ के पारंपरिक समाज में शादी-ब्याह केवल दो व्यक्तियों का रिश्ता नहीं, बल्कि पूरे गांव और परिवार का उत्सव होता था। ऐसे अवसरों पर महिलाओं का पारंपरिक श्रृंगार विशेष महत्व रखता था। दुल्हन के परिधान के साथ बुलाक भी उसके श्रृंगार का हिस्सा बनती थी। बुजुर्ग महिलाएं अपनी बहुओं और बेटियों को पुराने गहनों के बारे में बतातीं और कई परिवारों में पीढ़ियों से संभालकर रखे गए आभूषण विशेष अवसरों पर निकाले जाते थे। इस तरह एक बुलाक सिर्फ आभूषण नहीं रहती थी। उसमें मां की याद होती थी, दादी की कहानी होती थी और परिवार की कई पीढ़ियों का स्पर्श जुड़ा होता था। पहाड़ में पारंपरिक आभूषणों की एक खास खूबी यह रही कि वे स्थानीय कारीगरों की कला से जुड़े थे। सुनार केवल गहना बनाने वाला कारीगर नहीं होता था, बल्कि वह स्थानीय संस्कृति और परिवारों की पसंद को भी समझता था। बुलाक के डिजाइन में स्थानीय शिल्प की झलक दिखाई देती थी। महीन काम, छोटे आकार और पारंपरिक आकृतियां इसे सामान्य बाजार में मिलने वाले आभूषणों से अलग बनाती थीं।

लेकिन वक्त बदला। गांवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ा। पारंपरिक परिधान रोजमर्रा की जिंदगी से दूर होने लगे। इसके साथ ही कई पुराने आभूषण भी संदूकों और संदूकों के भीतर रखी स्मृतियों तक सीमित होते गए। आज की पीढ़ी पारंपरिक गहनों को नए अंदाज में पहनना चाहती है। यही कारण है कि बुलाक भी अब केवल पारंपरिक पोशाक तक सीमित नहीं है। कुछ युवा इसे आधुनिक परिधानों के साथ भी पहनने लगी हैं। सोशल मीडिया ने भी पारंपरिक आभूषणों को नई पहचान देने में भूमिका निभाई है। पहाड़ की संस्कृति और पारंपरिक पहनावे को लेकर बढ़ती रुचि ने बुलाक जैसे आभूषणों को फिर चर्चा में ला दिया है। लेकिन यहां सवाल केवल फैशन का नहीं है। अगर बुलाक केवल फैशन बनकर रह गई और उसके पीछे की कहानी भूल गई तो एक पूरी सांस्कृतिक स्मृति धीरे-धीरे कमजोर पड़ सकती है।

कई घरों में पुराने आभूषणों की अपनी कहानी होती है। मां की शादी में पहनी गई बुलाक बेटी की शादी तक पहुंचती है। कभी दादी की बुलाक पोती के श्रृंगार का हिस्सा बन जाती है। इन गहनों की कीमत केवल सोने के भाव से नहीं लगाई जा सकती। क्योंकि उनकी असली कीमत उस कहानी में है जो उनके साथ जुड़ी है। एक छोटी-सी बुलाक कभी किसी मां की विदाई की गवाह रही होगी। कभी किसी बेटी के विवाह में चमकी होगी। कभी किसी त्योहार पर गांव की महिलाओं के सामूहिक उत्सव का हिस्सा बनी होगी। इसलिए पहाड़ के पुराने संदूक में रखी बुलाक वास्तव में बीते समय की एक छोटी-सी डायरी है।

पलायन और बदलती जीवनशैली ने पहाड़ के पारंपरिक पहनावे और आभूषणों को प्रभावित किया है। गांव खाली हो रहे हैं तो पारंपरिक शिल्प से जुड़े कई कारीगरों के सामने भी बाजार की चुनौती है। जरूरत इस बात की है कि बुलाक जैसे आभूषणों को केवल संग्रहालय की वस्तु न बनने दिया जाए। इन्हें आधुनिक डिजाइन के साथ जोड़ा जाए, स्थानीय कारीगरों को बाजार मिले और नई पीढ़ी को इनके सांस्कृतिक महत्व के बारे में बताया जाए। स्कूलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और स्थानीय मेलों में पहाड़ के पारंपरिक आभूषणों की प्रदर्शनी और इनके पीछे की कहानियां नई पीढ़ी तक पहुंचाई जा सकती हैं।

पहाड़ की संस्कृति को समझने के लिए हमेशा बड़े-बड़े स्मारकों की जरूरत नहीं होती। कभी किसी बुजुर्ग महिला के संदूक में रखा छोटा-सा गहना भी पूरी संस्कृति की कहानी कह देता है। बुलाक भी ऐसा ही एक गहना है। उसकी चमक में पहाड़ की स्त्री का श्रृंगार है, उसके डिजाइन में स्थानीय कारीगर की मेहनत है, उसकी स्मृति में परिवार की पीढ़ियां हैं और उसके अस्तित्व में पहाड़ की लोकसंस्कृति की वह डोर है जो अतीत को वर्तमान से जोड़ती है। बुलाक छोटी है, लेकिन इसकी कहानी बहुत बड़ी है और शायद यही वजह है कि जब पहाड़ की कोई बेटी अपनी नाक में बुलाक सजाती है, तो वह सिर्फ गहना नहीं पहनती वह अपने साथ पहाड़ की एक पूरी विरासत लेकर चलती है।

गंगा की लहरों के बीच पुलिस बनी जीवनरक्षक, महिला को बचाया

संवाददाता

टिहरी। बिमारी से परेशान महिला ने गंगा में छलांग लगा दी। महिला को पुलिस ने सकुशल बाहर निकाल परिजनों के सुपुर्द किया।

आज यहां चौकी जानकी सेतु क्षेत्रांतर्गत पूर्णानंद घाट के पास एक महिला द्वारा गंगा नदी में छलांग लगाने की सूचना प्राप्त हुई। सूचना मिलते ही मौके पर तैनात जल पुलिस कर्मियों द्वारा तत्काल सतर्कता एवं तत्परता दिखाते हुए महिला की तलाश एवं रेस्क्यू की कार्रवाई शुरू की गई।

मौके पर तैनात हेड कांस्टेबल सुभाष ध्यानी, कांस्टेबल संतोष, कांस्टेबल वीरेंद्र एवं उप निरीक्षक पिंकी तोमर द्वारा अदम्य साहस, सतर्कता एवं सूझबूझ का परिचय देते हुए गंगा नदी में छलांग लगाने वाली महिला को सकुशल रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया। रेस्क्यू के उपरांत महिला को पूर्णानंद घाट से चौकी जानकी सेतु लाया गया। पुलिस द्वारा महिला के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर तत्काल उसके परिजनों से संपर्क किया गया।

सूचना मिलते ही महिला के पति एवं भाई चौकी जानकी सेतु पहुंचे। परिजनों से पूछताछ में पता चला कि महिला की तबीयत/स्वास्थ्य खराब होने के कारण वह सुबह घर से निकल गई थीं। परिजनों द्वारा उनकी काफी तलाश की गई, लेकिन उनका कोई पता नहीं चल पाया था। इसी दौरान चौकी जानकी सेतु से फोन प्राप्त होने पर वे तत्काल चौकी पहुंचे। आवश्यक कार्रवाई एवं पहचान की पुष्टि के उपरांत टिहरी पुलिस द्वारा महिला को सकुशल उनके पति एवं भाई के सुपुर्द कर दिया गया।

महिला के परिजनों द्वारा इस संवेदनशील मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए महिला की जान बचाने तथा उन्हें सकुशल परिजनों तक पहुंचाने के लिए टिहरी पुलिस के जल पुलिस कर्मियों एवं चौकी जानकी सेतु पुलिस टीम की भूरि-भूरि प्रशंसा एवं आभार व्यक्त किया गया।

टिहरी पुलिस की सतर्कता, साहस एवं त्वरित रेस्क्यू कार्रवाई के चलते एक अमूल्य जीवन को बचाया जा सका। टिहरी पुलिस कानून-व्यवस्था के साथ-साथ संकट की घड़ी में आमजन के जीवन की सुरक्षा एवं सहायता के लिए सदैव तत्पर है।

मानसून में स्वास्थ्यवर्धक ड्रिंक्स का करें सेवन

मानसून के मौसम में शरीर में पानी की कमी होना आम है, लेकिन इसके कारण कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में क्यूं न कुछ ऐसे खास मॉकटेल्स बनाए जाएं, जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ आपको हाइड्रेट रखने में भी मदद कर सकें। आइए आज हम आपको कुछ ऐसी मॉकटेल ड्रिंक्स की रेसिपी बताते हैं, जिनका सेवन मानसून में फायदेमंद हो सकता है।

मैंगो डिलाइट : सबसे पहले एक कप आम का गूदा, एक कप नारियल पानी, आधा कप नारियल क्रीम, 3 तुलसी के पत्ते, एक बड़ी चम्मच चीनी और थोड़ी-सी बर्फ को मिक्सी में डालकर अच्छे से पीस लें। अब इस मिश्रण को गिलास में भरे और इस पर आम के कुछ टुकड़े डालें। इसके बाद इस स्वादिष्ट मॉकटेल ड्रिंक को परोसें और खुद भी इसका जायका लें। मॉकटेल ड्रिंक के अलावा आप आम के इन 5 व्यंजनों को भी ट्राई कर सकते हैं।

कीवी, शहद, सोडा और नींबू के रस की मॉकटेल ड्रिंक : सबसे पहले एक जार में 2 चम्मच नींबू का रस, स्वादानुसार शहद और थोड़ा सोडा पानी मिलाकर नींबू पानी बना लें। अब इस नींबू पानी में 8-10 बारीक कटे कीवी के टुकड़े, 3-4 नींबू के गोल स्लाइस और 4-5 पुदीने की थोड़ी पत्तियां अच्छे से मिलाएं। इसे कम से कम एक से 2 मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दें। अब तैयार मॉकटेल में बर्फ के टुकड़े डालें और फिर इसका सेवन करें।

ब्लूबेरी लाइम मॉकटेल : सबसे पहले पानी में डेढ़ कप ताजा ब्लूबेरी, एक बड़ी चम्मच कदूकस किया हुआ अदरक और 4 बड़ी चम्मच चीनी डालकर एक उबाल दिलाए और एक चम्मच से ब्लूबेरी को मैश करें। इसके बाद मिश्रण को ठंडा होने दें, फिर इसे एक कंटेनर में छानकर इसमें नींबू का रस, बर्फ के टुकड़े और कुछ पुदीने की पत्तियां डालें। अब इसे गिलास में डालकर परोसें। घर पर ब्लूबेरी के इन 5 व्यंजनों को बनाना भी आसान है।

सेब मॉकटेल : इसके लिए सबसे पहले एक जार में 1-2 सेब के गोल टुकड़े, 3-4 नींबू के स्लाइस, थोड़ा दालचीनी पुडर और स्टार एनीज डालें। अब इसमें थोड़ा सेब का जूस, नींबू का रस और शहद डालकर अच्छी तरह मिलाएं और एक घंटे के लिए फ्रिज में रख दें। इसके बाद ड्रिंक को गिलास में कुछ बर्फ के टुकड़े डालें। इसके बाद इसमें थोड़ा क्लब सोडा समेत सेब के टुकड़ों डालकर इसे परोसें।

संतरे के जूस और पुदीने की मॉकटेल ड्रिंक : इस मॉकटेल ड्रिंक को बनाने के लिए सबसे पहले एक जार में 2 कप संतरे का जूस, एक चौथाई कप नींबू का रस, एक चौथाई कप पानी और 2-3 बड़ी चम्मच चीनी मिलाएं। जब चीनी अच्छी तरह घुल जाए तो इसमें थोड़ा सोडा, पुदीने की कुछ पत्तियां और कुछ बर्फ के टुकड़े डालें। अब इस मॉकटेल को गिलास में डालकर परोसें और खुद भी पीएं। यकीनन यह आपके घर में सभी को पसंद आएगी।

सेहतमंद रहने के लिए बेहद जरूरी है वर्क लाइफ बैलेंस का होना

फिट एंड फाइन रहने के लिए लाइफ में वर्क लाइफ बैलेंस का होना बेहद जरूरी है। कामयाबी के लिए घंटों-घंटों तक मेहनत करना ठीक माना जाता है लेकिन खुशहाल और हेल्दी लाइफ के लिए काम और फैमिली के बीच बैलेंस बनाना चाहिए। इसे ही वर्क लाइफ बैलेंस कहा जाता है। सरल शब्दों में कहें तो काम और फैमिली के बीच तालमेल रखना ही वर्क लाइफ बैलेंस कहलाता है। इस तालमेल के बिगडने से काफी कुछ बिगड़ सकता है। आइए जानते हैं वर्क लाइफ बैलेंस कैसे बना सकते हैं।

प्राथमिकता तय करें

एक समय में एक ही काम करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले प्राथमिकता तय करनी पड़ेगी। जो काम पहले जरूरी है उसे पहले करना चाहिए और गैरजरूरी कामों को बाद में करें। इससे पर्सनल लाइफ के लिए समय मिल जाता है।

छुट्टियां मैनेज करें

काम में जो छुट्टियां मिले, उसे सही तरह मैनेज करें, जिससे घर के किसी जरूरी इवेंट मिस न हो। ये बात समझनी चाहिए कि जिंदगी में जो समय आ रहे हैं, वो बीत जाएंगे और दोबारा नहीं आएंगे। फैमिली के साथ दोबारा टाइम भी नहीं मिलेगा। इसलिए ऑफिस के काम के साथ-साथ अपनी फैमिली और पर्सनल लाइफ को भी वक्त दें।

टाइम को मैनेज करें

हर किसी के पास एक निश्चित समय है इसलिए टाइम को मैनेज करना सीखें। अगर एक काम निश्चित समय पर नही कर पा रहे है तो किसी दूसरे की मदद लें, इसके लिए कभी भी हिचकिचाएं नहीं। इससे काम आसानी से हो जाएगा और थकान भी आप पर हावी नहीं होगी।

खुद के लिए भी वक्त निकालें

ऑफिस और फैमिली के लिए वक्त निकालते-निकालते खुद को समय देना न भूलें। अपनी हेल्थ के लिए कुद के लिए समय निकालना चाहिए। इस वक्त में जो काम आपको खुशी दे, वही करें। इससे आप खुद को और दूसरों को खुश रख पाएंगे।

डाक कांवड़िये व श्रद्धालू गंगा घाटों पर सतर्कता बरतें: जिलाधिकारी

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। जनपद में हो रही भारी वर्षा के मद्देनजर जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने डाक कांवड़ियों एवं श्रद्धालुओं से गंगा घाटों पर विशेष सतर्कता बरतने की अपील की है। उन्होंने यात्रियों से मौसम की स्थिति को देखते हुए सुरक्षित स्थानों पर रहने तथा प्रशासन द्वारा जारी सुरक्षा दिशा-निर्देशों का पालन करने को कहा है।

जिलाधिकारी ने गंगा घाटों पर तैनात सुरक्षा बलों, पुलिस जवानों एवं संबंधित अधिकारियों को अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि भारी बारिश के कारण गंगा का जलस्तर बढ़ने अथवा तेज बहाव की स्थिति में कांवड़ यात्रियों एवं श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। घाटों पर लगातार निगरानी रखी जाए और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि गंगा घाटों और कांवड़ यात्रा मार्गों पर मौसम की स्थिति पर लगातार नजर रखी जाए। संवेदनशील एवं जोखिम वाले स्थानों पर विशेष निगरानी रखते हुए श्रद्धालुओं को ऐसे स्थानों पर जाने से रोका जाए। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें तत्काल सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए।

उन्होंने डाक कांवड़ यात्रियों से अपील की कि भारी बारिश के दौरान गंगा में स्नान करने और तेज बहाव वाले क्षेत्रों में जाने से बचें। प्रशासन एवं पुलिस द्वारा जारी किए जा रहे सुरक्षा निर्देशों का पूरी तरह पालन करें और अपनी यात्रा के दौरान सावधानी बरतें। जनपद में हो रही भारी वर्षा के दृष्टिगत जलभराव वाले क्षेत्रों में संबंधित अधिकारियों को तत्काल जल निकासी की कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि जलभराव की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें, ताकि आमजन एवं कांवड़ यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि जनपद में भारी वर्षा के कारण किसी भी क्षेत्र में कोई घटना घटित होने पर इसकी तत्काल सूचना कंट्रोल रूम को दी जाए, ताकि राहत एवं बचाव कार्यों को बिना किसी देरी के शुरू किया जा सके। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए पूरी तरह अलर्ट रहने के निर्देश दिए हैं।

मोलधार इंटर कॉलेज के विलय का अभिभावकों ने किया विरोध

नई टिहरी(आरएनएस)। राजकीय इंटर कॉलेज मोलधार में अभिभावक-शिक्षक संघ की बैठक में कलस्टर योजना के तहत विद्यालय को दूसरे विद्यालय में मर्ज किए जाने की चर्चा पर अभिभावकों ने कड़ा विरोध जताया।

अभिभावकों ने कहा कि विद्यालय को मर्ज किया गया तो वे आंदोलन शुरू करने को मजबूर होंगे। कहा वे अपने बच्चों को मोलधार से अन्यत्र किसी विद्यालय में नहीं भेजेंगे। बैठक में अभिभावकों ने कहा कि विद्यालय को मर्ज करने के बजाय यहां पठन-पाठन और अन्य व्यवस्थाओं को बेहतर किया जाना चाहिए। विद्यालय के भविष्य को लेकर अभिभावकों ने एकजुट होकर अपनी आपत्ति दर्ज कराई। कहा विद्यालय को दूसरे विद्यालय में मर्ज किए जाने से छात्र-छात्राओं को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। बैठक में अभिभावक-शिक्षक संघ की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें चिरंजीलाल डबराल को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।

प्रधानाचार्य विजय सिंह कैंतुरा पदेन उपाध्यक्ष, जबकि देवेंद्र सिंह बर्त्वाल को सचिव और नसीम बेग को सदस्य चुना गया। नीतू विश्वकर्मा को विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। बैठक में छात्र-छात्राओं की नियमित उपस्थिति, उन्हें नशे से दूर रखने, वर्ष 2026 के परीक्षा परिणाम, गणवेश और पठन-पाठन सहित विद्यालय से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। अभिभावकों और शिक्षकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई में सुधार के साथ उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने पर जोर दिया। बैठक में शिक्षक मनोहर लाल उनियाल, तस्लीम अहमद, लक्ष्मी सजवाण, रमा रतूड़ी, गीता रावत मस्तवाल, प्रताप पुंडीर, सतीश थपलियाल, शेखरानंद उनियाल, भगवान सिंह नेगी, रीता चौहान, रेणु, शीला, हेमलता व शाहजहां आदि मौजूद रहीं।

चम्पावत में 30 अगस्त तक होंगे प्रवेश

चम्पावत(आरएनएस)। कौशल और आत्मनिर्भरता के विजन के तहत आईटीआई में 30 अगस्त तक ऑनलाइन प्रवेश किए जा सकेंगे। कलक्ट्रेट के प्रभारी अधिकारी कमल तिवारी ने बताया कि क्राफ्ट्समैन ट्रेनिंग स्कीम के तहत शैक्षिक अर्हता आठवीं और दसवीं पास है।

खोया-पाया केन्द्र जानकी सेतु ने 3 बिछड़े लोगों को उनके अपनों से मिलाया

संवाददाता

टिहरी। जानकी सेतु द्वारा अलग-अलग मामलों में बिछड़े 03 लोगों को सकुशल उनके परिजनों एवं साथियों से मिलाया गया।

आज यहां कांवड़ मेला-2026 के दौरान टिहरी पुलिस द्वारा श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं सहायता के लिए लगातार किए जा रहे प्रयासों के क्रम में खोया-पाया केन्द्र जानकी सेतु द्वारा अलग-अलग मामलों में बिछड़े 03 लोगों को सकुशल उनके परिजनों एवं साथियों से मिलाया गया। कांवड़ यात्रा के दौरान हरदोई, उत्तर प्रदेश निवासी करीब 50 वर्षीय व्यक्ति अपने साथी से बिछड़ गए थे। उन्हें खोया-पाया केन्द्र जानकी सेतु पर लाया गया। केन्द्र पर तैनात पुलिस कर्मियों द्वारा तत्काल उनके साथी से संपर्क किया गया तथा उन्हें केन्द्र पर बुलाया गया। आवश्यक सत्यापन एवं नियमानुसार कार्यवाही के उपरांत बिछड़े व्यक्ति को सकुशल उनके साथी के सुपुर्द किया गया। बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

निवासी 18 वर्षीय युवती एवं 13 वर्षीय किशोर नीलकंठ से वापस आते समय लक्ष्मण झूला क्षेत्र में अपने मामा से बिछड़ गए थे। दोनों सहायता के लिए खोया-पाया केन्द्र जानकी सेतु पहुंचे। पुलिस कर्मियों द्वारा तत्काल अथक प्रयास करते हुए परिजनों की जानकारी प्राप्त की गई तथा उनके मामा से दूरभाष के माध्यम से संपर्क किया गया। उन्हें खोया-पाया केन्द्र पर बुलाया गया। आवश्यक सत्यापन एवं नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करने के उपरांत दोनों को सकुशल उनके मामा के सुपुर्द किया गया। कांवड़ मेला-2026 के दौरान खोया-पाया केन्द्र जानकी सेतु श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण सहायता केन्द्र के रूप में लगातार सराहनीय कार्य कर रहा है। पुलिस कर्मियों द्वारा बिछड़े श्रद्धालुओं की पहचान कर उनके परिजनों एवं साथियों से संपर्क स्थापित करते हुए उन्हें सुरक्षित रूप से अपनों से मिलाने के लिए त्वरित एवं संवेदनशील कार्यवाही की जा रही है। टिहरी पुलिस श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सहायता एवं सुविधा के लिए पूरी संवेदनशीलता एवं तत्परता के साथ निरंतर कार्य कर रही है।

चॉकलेट के आदी बच्चों को खिलाएं उसके ये सेहतमंद विकल्प, उन्हें स्वाद भी आएगा पसंद

बच्चों को चॉकलेट खाना बहुत पसंद होता है, लेकिन इसमें मौजूद चीनी और चर्बी के कारण उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। ऐसे में माता-पिता हमेशा इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि बच्चों को सेहतमंद मिठाइयां कैसे खिलाएं। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे सेहतमंद विकल्प बताते हैं, जो चॉकलेट की तरह स्वादिष्ट हैं और बच्चों को बहुत पसंद आएंगे। चॉकलेट के ये विकल्प सेहत के लिए भी अच्छे हैं।

डार्क चॉकलेट : डार्क चॉकलेट बच्चों के लिए एक बढ़िया विकल्प है। इसमें कम चीनी होती है और यह सेहत के लिए फायदेमंद तत्वों से भरी होती है। आप डार्क चॉकलेट को पिघलाकर मिल्कशेक या स्मूदी में मिला सकते हैं या इसे फल के साथ परोस सकते हैं। यह बच्चों को मिठास देने के साथ-साथ उनकी सेहत का भी ख्याल रखती है। डार्क चॉकलेट का स्वाद भी बहुत अच्छा होता है, जिसे बच्चे इसे खुशी-खुशी खा लेंगे।

कैरब पाउडर : कैरब पाउडर कैरब फल से बनता है और इसमें प्राकृतिक मिठास होती है। यह कोको पाउडर का सेहतमंद विकल्प है। आप इसे दूध, स्मूदी या दही में मिला सकते हैं या फिर इससे ब्राउनी और कुकीज बना सकते हैं। कैरब पाउडर में कैफीन नहीं होती, जिससे यह बच्चों के लिए सुरक्षित है। यह उनके लिए एक पौष्टिक विकल्प बन सकता है और उनकी सेहत का भी ख्याल रखता है। इसके अलावा यह स्वाद में भी बेहतरीन है।

मेपल सिरप : मेपल सिरप एक प्राकृतिक मीठा पदार्थ होता है, जिसे आप बच्चों के किसी भी व्यंजन में इस्तेमाल कर सकते हैं। यह रिफाइंड चीनी का अच्छा विकल्प है और इसमें कई जरूरी तत्व होते हैं। आप इसे पैनकेक, वैफल्स या ओट्स पर डाल सकते हैं या फिर इसे स्मूदी में मिला सकते हैं। मेपल सिरप का स्वाद भी बहुत अच्छा होता है, जिससे बच्चे इसे खुशी-खुशी खा लेंगे। यह उनकी सेहत के लिए भी फायदेमंद है।

गुड़ : गुड़ एक पारंपरिक मीठा पदार्थ है, जो आयरन और जरूरी तत्वों से भरा होता है। आप गुड़ को बारीक काटकर या कद्दूकस करके अपने बच्चों की रेसिपी में शामिल कर सकते हैं। गुड़ का सेवन पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करता है और खून साफ करता है। गुड़ का स्वाद भी बहुत अच्छा होता है, जिससे बच्चे इसे खुशी-खुशी खा लेंगे। यह उनके लिए एक पौष्टिक विकल्प बन सकता है और उनकी सेहत का भी ख्याल रखता है।

फलों का सिरप : फलों का सिरप प्राकृतिक फलों से बनता है और इसमें कोई अप्राकृतिक स्वाद या रंग नहीं होता। आप इसे दही, आइसक्रीम या स्मूदी पर डाल सकते हैं या फिर इसे पानी में मिलाकर पी सकते हैं। फलों का सिरप बच्चों को ताजगी देता है और उनकी प्यास बुझाता है। इन सभी विकल्पों से न केवल बच्चों की मिठास की जरूरत पूरी होगी, बल्कि उनकी सेहत भी हमेशा बेहतर बनी रहेगी।

धनुष और वेत्रिमारन की ब्लॉकबस्टर जोड़ी की वापसी!

एक्टर धनुष ने डायरेक्टर वेट्री मारन के साथ अपनी पांचवीं फ़िल्म तमिल मुरुगन का पहला लुक जारी किया। पोस्टर में धनुष एक हाथी पर सवार और एक बड़ी सेना के सामने खड़े दिखाई दे रहे हैं; साथ ही, उन्होंने भगवान मुरुगन से जुड़ा पवित्र भाला वेल भी थाम रखा है।

इस घोषणा ने अपने सांस्कृतिक संदर्भ के कारण भी लोगों का ध्यान खींचा है। फिल्म का नाम और विज़ुअल्स इसे तमिल पहचान से गहराई से जोड़ते हैं; तमिलनाडु में भगवान मुरुगन का एक खास स्थान है, जहाँ उन्हें तमिल कडावुल यानी तमिल लोगों के देवता के रूप में पूजा जाता है। फिल्म के फर्स्ट-लुक वीडियो और पोस्टर ने भगवान मुरुगन की कहानी पर आधारित एक और आने वाली फिल्म के बारे में भी ऑनलाइन चर्चा छेड़ दी है।

तमिल मुरुगन धनुष और वेट्री मारन के बीच एक और सहयोग है। पोल्लाधावन, आडुकालम, वडा चेन्नई और असुरन के बाद यह उनकी साथ में पांचवीं फिल्म है। इस जोड़ी ने वडा चेन्नई 2= अनबुविन एज़ुची नाम से एक सीक्वल की भी घोषणा की थी, लेकिन उस फिल्म का प्रोडक्शन अभी शुरू नहीं हुआ है।

पोस्टर में प्रभावशाली दैवीय दृश्य दिखाए गए हैं। धनुष एक हाथी पर बैठे हैं और एक विशाल सेना के सामने हैं। उन्हें वेल पकड़े हुए दिखाया गया है, जो भगवान मुरुगन से जुड़ा पारंपरिक भाला है; उत्तर भारत में उन्हें कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है।

इस फ़िल्म की कहानी अरिवुमथी ने लिखी है और साई अभ्यंकर इसका संगीत तैयार करेंगे। यह फ़िल्म तमिलनाडु में भगवान मुरुगन से जुड़ी सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पहचान पर आधारित है।

इस फ़िल्म की घोषणा ऐसे समय में हुई है जब तेलुगु स्टार जूनियर एनटीआर और डायरेक्टर त्रिविक्रम श्रीनिवास भी भगवान मुरुगन की कहानी पर आधारित एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। उस फ़िल्म की हाल ही में आलोचना हुई थी, जब उसके प्रोड्यूसर ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि भगवान मुरुगन का जन्म उत्तर भारत में हुआ था। इस टिप्पणी की कई तमिल लोगों ने आलोचना की थी, जिन्होंने इसे अपनी सांस्कृतिक विरासत का अपमान माना था। अब तमिल मुरुगन को उस विवाद के जवाब में एक सांस्कृतिक कदम के तौर पर देखा जा रहा है। कई फ़ैन्स का कहना है कि यह फ़िल्म सीधे तौर पर जूनियर एनटीआर और त्रिविक्रम के प्रोजेक्ट का जवाब देती है और देवता की क्षेत्रीय जड़ों को फिर से स्थापित करती है।

ब्लैक ब्रालेट में सान्या मल्होत्रा ने ढाया कहर, बोल्ड फोटोशूट ने बढ़ाया इंटरनेट का पारा

बॉलीवुड की दंगल गर्ल यानी सान्या मल्होत्रा अपनी बेहतरीन अदाकारी के साथ-साथ अपने कमाल के फैशन सेंस के लिए भी जानी जाती हैं। अक्सर सादगी भरे अंदाज में नजर आने वाली सान्या ने इस बार अपने इंस्टाग्राम पर एक ऐसा फोटोशूट शेयर किया है, जिसने सोशल मीडिया का तापमान बढ़ा दिया है।

तस्वीरों में सान्या मल्होत्रा एक बेहद खूबसूरत ब्लैक लेसी नेट ब्रालेट पहने नजर आ रही हैं, जिसे उन्होंने लो-वेस्ट ब्लैक सिल्क लॉन्ग स्कर्ट के साथ पेयर किया है। इस बोल्ड आउटफिट के साथ उन्होंने ब्लैक श्रग भी कैरी किया है, जो उनके लुक में एक रिलैक्स और क्लासी वाइब जोड़ रहा है।

अपने इस लुक को और भी अट्रैक्टिव बनाने के लिए उन्होंने पैरों में ब्लैक कलर के थाई-हाई लेदर बूट्स पहने हैं। तस्वीरों में सान्या मल्होत्रा एक ब्लैक कलर के स्टाइलिश बेंच पर लेटकर और खड़े होकर बेहद सिजलिंग और सेक्सी पोज देती नजर आ रही हैं।

उनकी टोंड बॉडी और परफेक्ट एब्स इस लुक में साफ दिखाई दे रहे हैं। इस पूरे फोटोशूट में सान्या ने नो-ज्वैलरी लुक अपनाया है। बिना किसी हैवी एक्सेसरीज के भी उनका नेचुरल ग्लो उभर कर आ रहा है।

सान्या के फेशियल एक्सप्रेशंस बेहद इंटेंस, सिडक्टिव और कॉन्फिडेंट हैं। स्मोकी आइज और न्यूड लिपस्टिक के साथ उनका यह मेकअप लुक उनके विंटेज और बोल्ड वाइब को पूरी तरह कॉम्प्लीमेंट कर रहा है। सान्या को उनके खूबसूरत घुंघराले बालों के लिए जाना जाता है। इस फोटोशूट में भी उन्होंने अपने बालों के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की।

सान्या मल्होत्रा के इस बोल्ड फोटोशूट पर फैंस जमकर कमेंट कर रहे हैं। फैंस सान्या की तस्वीरों पर लगातार फायर और रेड हार्ट इमोजी पोस्ट कर रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट किया, पहचानना मुश्किल हो रहा है, सान्या का यह अब तक का सबसे हॉट अवतार है!

बचपन का अनुशासन बॉलीवुड में काम आया- संजना सांघी

अभिनेत्री संजना सांघी अपनी अपकमिंग फिल्म हिटमैन को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच उन्होंने अपनी जिंदगी के सफर का जिक्र करते हुए मुश्किलों का सामना करने की हिम्मत, अनुशासन और अनिश्चितताओं को अपनाने के बारे में बात की। रॉकस्टार, दिल बेचारा और कड़क सिंह जैसी फिल्मों में काम कर चुकीं इस अभिनेत्री ने उन अनुभवों के बारे में बताया।

शुरुआत को याद करते हुए संजना ने बताया कि एक्टिंग उनकी जिंदगी में अचानक आई। उन्होंने कहा, जब मैं स्कूल में डांस सीख रही थी, तो मैं सिर्फ इसलिए डांस करती थी क्योंकि मुझे यह पसंद था। मैं एनुअल फंक्शन में परफॉर्म करती थी। मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं एक्टिंग करूंगी। जब मैं सिर्फ 13 साल की थी, तब बॉलीवुड के एक बड़े कास्टिंग डायरेक्टर मेरे स्कूल आए और मुझे एक फिल्म में कास्ट किया।

रॉकस्टार में एक्टिंग करने को लेकर उन्होंने कहा 13 साल की उम्र में, बिना किसी एक्टिंग अनुभव के भी, भारत के सबसे बड़े मेल स्टार्स में से एक के सामने खुद को मजबूती से पेश कर पाने की वजह वह मेहनत, अनुशासन और विनम्रता थी जो डांस ने मुझमें पैदा की थी।

उन्होंने बताया बहुत से भारतीय माता-पिता की तरह, मेरे माता-पिता भी चाहते थे कि मैं हर चीज में बेहतर करूं। जब मैं सात साल की थी, तो मेरे पिता चाहते थे कि मैं कथक सीखूं, जबकि मेरी मां चाहती थीं कि मैं कंटेम्पररी जैज सीखूं। कोई एक न चुन पाने की वजह से, मैंने दोनों ही चीजें सीखीं और स्कूल के बाद हर दिन बारी-बारी से उनका अभ्यास करती रही। शुरू में तो यह बहुत ज्यादा दबाव जैसा लगा और मुझे इसमें मजा भी नहीं आया। लेकिन धीरे-धीरे मुझे इससे प्यार हो गया और मुझे एहसास हुआ कि यह मुझे अनुशासन और कड़ी मेहनत सिखा रहा है, जो आगे चलकर मुझे जिंदगी के सबसे मुश्किल हालात का सामना करने में मदद करेगा।

दीवारों में कैद बैरिस्टर मुकुंदी लाल की प्रतिमा

कोटद्वार(आरएनएस)। जिन बैरिस्टर मुकुंदी लाल की प्रतिमा को देखकर भावी पीढ़ी को उनके आदर्शों और योगदान से प्रेरणा लेनी थी। शासन-प्रशासन की अनदेखी के चलते वही प्रतिमा पिछले करीब 19 वर्षों से दीवारों में कैद होकर रही गई है। हैरानी की बात यह है कि प्रतिमा को अन्यत्र शिफ्ट करने की अब तक कोई योजना नहीं है। अब लोग न्यायालय परिसर में स्थापित करने की मांग उठा रहे हैं। गढ़वाल के भीष्म कहे जाने वाले बैरिस्टर मुकुंदी लाल गढ़वाल कमिश्नरी के जनक और गढ़वाली चित्रशैली के उन्नायकों में शामिल थे। भावी पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराने के उद्देश्य से वर्ष 1987 में बदरीनाथ मार्ग स्थित बच्चा पार्क में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई थी। पार्क के लिए संत स्वामीराम ने सत्तर के दशक में तत्कालीन नगर पालिका को तीन लाख रुपये दिए थे। इसके बाद डाकघर के समीप करीब एक बीघा भूमि पर बच्चा पार्क बनाया गया।वर्ष 2006 में विरोध के बावजूद पालिका ने पार्क की भूमि प्रेक्षागृह निर्माण के लिए दे दी। वर्ष 2015 में प्रेक्षागृह बनकर तैयार हुआ और भूतल की दुकानें भी लीज पर आवंटित कर दी गईं। निर्माण के दौरान प्रतिमा हटाने के बजाय उसे चाहर दीवारी से घेर दिया गया। वरिष्ठ अधिवक्ता अरुण कुमार भट्ट ने कहा कि प्रेक्षागृह बनने के बाद प्रतिमा दीवारों में कैद हो गई। क्षेत्र के करीब 90 फीसदी लोगों को इसकी जानकारी तक नहीं है। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी और मेयर शैलेंद्र रावत से प्रतिमा को न्यायालय परिसर में सम्मानजनक स्थान पर स्थापित करने की मांग की है।

आरटीई की दूसरी लॉटरी नहीं खुलने पर जताई नाराजगी

विकासनगर(आरएनएस)। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत निजी विद्यालयों में प्रवेश के लिए दूसरी लॉटरी नहीं खुलने को लेकर जन संघर्ष मोर्चा ने सरकार पर निशाना साधा है। मोर्चा अध्यक्ष ने कहा कि दूसरी लॉटरी के इंतजार में गरीब बच्चों और उनके अभिभावकों की आंखें पथरा गई हैं, लेकिन शिक्षा विभाग की ओर से इस संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी जा रही है। अस्पताल रोड स्थित कैंप कार्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए मोर्चा अध्यक्ष रघुनाथ नेगी ने आरोप लगाया कि सरकार की लचर कार्यप्रणाली के कारण प्रदेशभर के गरीब बच्चों को आरटीई के तहत इस सत्र में मिलने वाला प्रवेश प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि आरटीई के तहत पहली लॉटरी अप्रैल में निकाली गई थी, जबकि दूसरी लॉटरी सामान्य तौर पर जुलाई में खोले जाने की उम्मीद रहती है। अगस्त का पहला सप्ताह बीतने के बाद भी दूसरी लॉटरी नहीं खोली गई हैनेगी ने कहा कि सबसे बड़ी चिंता यह है कि दूसरी लॉटरी को लेकर विभाग की ओर से कोई स्पष्ट जानकारी तक सामने नहीं आ रही है। उन्होंने कहा कि गरीब परिवारों के बच्चे आखिर जाएं तो जाएं कहां। आरटीई के तहत निजी विद्यालयों में प्रवेश की उम्मीद लगाए बैठे अभिभावक लगातार इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार से संबंधित किसी प्रकार की अड़चन है तो शिक्षा मंत्री को मामले में प्रभावी पैरवी करनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की उदासीनता के चलते गरीब बच्चों का शैक्षिक सत्र प्रभावित होने का खतरा बना हुआ है।

सू- दोकू क्र.032

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.31 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान यात्रा में गूंजे देशभक्ति के स्वर, शहीदों को किया नमन

अल्मोड़ा(आरएनएस)। भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ के अवसर पर उत्तराखंड स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी संगठन के तत्वावधान में अल्मोड़ा में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान यात्रा निकाली गई।

यात्रा के दौरान शहर में देशभक्ति के स्वर गूंजे और लोगों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। सम्मान यात्रा सुबह 10 बजे ऐतिहासिक नंदा देवी मंदिर परिसर से शुरू हुई। यात्रा मुख्य बाजार से होते हुए विक्टर मोहन जोशी और पंडित हरगोविंद पंत की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करते हुए जिला चिकित्सालय, लोहे के शेर और माल रोड से होकर गांधी पार्क चौघानपाटा पहुंची। यहां श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के योगदान को याद करते हुए कहा कि देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीरों का बलिदान हमेशा याद रखा जाएगा। प्रदेश उपाध्यक्ष कमलेश पांडे ने कहा कि नौ अगस्त 1942 को महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत कर अंग्रेजी शासन के खिलाफ बिगुल फूंका था। इस आंदोलन में उत्तराखंड के भी हजारों देशभक्तों ने भाग लेकर आजादी की लड़ाई को मजबूती दी। इस दौरान जिला कारागार के नेहरू वार्ड में आयोजित अगस्त क्रांति कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के उत्तराधिकारियों को आमंत्रित नहीं किए जाने पर रोष जताया गया। वक्ताओं ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानी परिवारों को सम्मान और उचित स्थान दिया जाना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आनंद सिंह बिष्ट रहे, जबकि संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष कमलेश पांडे ने किया। इस अवसर पर मेयर अजय वर्मा, सांसद एवं केंद्रीय सड़क परिवहन राज्य मंत्री अजय टम्टा, विधायक मनोज तिवारी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष प्रकाश चंद्र जोशी, पूर्व विधायक कैलाश शर्मा, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष रघुनाथ सिंह चौहान, दर्जा राज्य मंत्री गोविंद पिल्खवाल, ललित लटवाल, रवि रौतेला, ताराचंद जोशी, सुरेंद्र चंद्र सुयाल, भाजपा जिलाध्यक्ष महेश नयाल, पार्षद हेम जोशी, पूरन रौतेला, दीप जोशी, डॉ. वसुधा पंत, सेवानिवृत्त कर्नल रविंद्र पांडे, शिवेंद्र गोस्वामी, ताराचंद साह, कैलाश वर्मा, हितेश तिवारी, नंदन सिंह कार्की समेत अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी मौजूद रहे।

एलिवेटेड मार्ग के लिए चिल्लरखाल बैरियर पर किया प्रदर्शन

कोटद्वार(आरएनएस)। लालढांग-चिल्लरखाल एलिवेटेड मार्ग निर्माण की मांग को लेकर भाबर के चिल्लरखाल बैरियर पर प्रदर्शन भी जारी रहा। प्रदर्शनकारियों ने निजी, यात्री, व्यावसायिक और मालवाहक वाहनों के लिए दिनरात आवागमन के लिए एलिवेटेड मार्ग के निर्माण की मांग की।वक्ताओं ने आरोप लगाया कि करीब 20 फुट चौड़ी सड़क जो सर्वे के अनुसार पहले से डामरीकृत थी उसे पगडंडी मार्ग बताकर न्यायालय के समक्ष गलत और भ्रामक जानकारी दी गई। सरकार को लालढांग-चिल्लरखाल के बीच करीब 11.5 किलोमीटर लंबे एलिवेटेड मार्ग का निर्माण जल्द शुरू करना चाहिए। काम चलाऊ सड़क किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी।प्रदर्शनकारियों ने स्थानीय जनप्रतिनिधि से मार्ग को डिनोटिफाई कराकर लोक निर्माण विभाग को हस्तांतरित करने की मांग की। सड़क की भूमि लोनिवि को हस्तांतरित होने पर वन विभाग को निर्धारित भूमि के एवज में राशि देकर अन्यत्र पौधरोपण कराया जा सकता है। वक्ताओं ने आरोप लगाया कि सरकार और जनप्रतिनिधि इस मामले का स्थायी समाधान करने के बजाय सड़क के मुद्दे को राजनीतिक रूप से जीवित रखना चाहते हैं।

मतदाताओं को एसआईआर में खामियों का समाधान किया

विकासनगर(आरएनएस)। कांग्रेस की ओर से जीवनगढ़ में कैंप लगाकर एसआईआर से संबंधित मतदाताओं की आपत्तियों और विसंगतियों के निराकरण में मदद की गई। कैंप में पहुंचे मतदाताओं को एसआईआर प्रक्रिया में सामने आ रही खामियों और उनके समाधान की जानकारी देने के साथ ही जरूरी दस्तावेज उपलब्ध कराने में भी सहायता की गई।

कांग्रेस एसआईआर कमेटी के सदस्य मो. इस्लाम ने मतदाताओं को बताया कि एसआईआर के दौरान सामने आ रही सभी विसंगतियों का समय रहते निराकरण कराना जरूरी है, ताकि उनका नाम मतदाता सूची में सही रूप से अंकित रहे। कार्यकर्ताओं ने मतदाताओं से अपने दस्तावेजों की जांच कराने और किसी भी प्रकार की त्रुटि होने पर उसका समाधान कराने की अपील की।उन्होंने कहा कि प्रशासन की ओर से जारी किए जा रहे नोटिसों के कारण कई लोगों में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। अनेक मतदाता नोटिस में दर्ज विसंगतियों को लेकर असमंजस में हैं और उन्हें यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है कि इसके समाधान के लिए कौन से दस्तावेज प्रस्तुत किए जाने हैं। इसी भ्रम को दूर करने और नोटिस में दी गई विसंगतियों का निराकरण कराने के उद्देश्य से कांग्रेस की ओर से गांव में कैंप लगाया गया है। मतदाताओं को जागरूक करते हुए कहा कि मतदाता सूची में अपना नाम सुरक्षित रखने के लिए एसआईआर से जुड़ी सभी विसंगतियों का निराकरण कराना आवश्यक है। मतदाताओं से अपने नाम, पते और अन्य विवरणों की जांच करने तथा किसी भी त्रुटि की स्थिति में समय रहते आवश्यक कार्रवाई करने की अपील की गई।

पीड़ित परिवार को दिया जरूरत का सामान

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। बुघाणी रोड के समीप बस्ती में भीषण अग्निकांड से प्रभावित परिवार की मदद के लिए श्री राम सेवा दल के सदस्य आगे आए। दल के सदस्यों ने पीड़ित परिवार से मुलाकात कर उन्हें घरेलू सामान उपलब्ध कराया। इस दौरान पीड़ित परिवार को रोजमर्रा की जरूरत का सामान दिया गया। सदस्यों ने संकट की इस घड़ी में उन्हें हरसंभव सहयोग का भरोसा भी दिलाया। इस मौके पर श्री राम सेवा दल के संरक्षक संजय घिल्डियाल, रोमी थपलियाल, आशीष उनियाल, शैलेश रावत और भगवती प्रसाद पुरी आदि मौजूद रहे।

किसानों की बैठक में उठीं बिजली और गन्ना भुगतान की समस्याएं

रुड़की(आरएनएस)। गांव बूढ़पुर चौहान में भारतीय किसान यूनियन टिकैत की बैठक आयोजित की गई। बैठक में किसानों की समस्याओं और आगे की रणनीति को लेकर चर्चा की गई। इस दौरान भारतीय किसान यूनियन भानु को छोड़कर 12 किसानों ने भारतीय किसान यूनियन टिकैत की सदस्यता ग्रहण की। किसान यूनियन की ओर से सभी का स्वागत किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए भाकियू टिकैत के जिलाध्यक्ष विजय शास्त्री ने कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से किसानों के हित में पर्याप्त काम नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कई राज्यों में किसानों के नलकूपों को निशुल्क बिजली दी जा रही है, जबकि उत्तराखंड में किसानों के नलकूपों के बिजली बिल माफ करने की मांग के बावजूद बिल बढ़ते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इकबालपुर शुगर मिल पर किसानों का करीब 130 करोड़ रुपये गन्ना भुगतान बकाया है। सरकार से कई बार मांग करने के बाद भी किसानों को उनका बकाया भुगतान नहीं मिल पा रहा है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो रही है?

विजय शास्त्री ने कहा कि झबरेड़ा क्षेत्र में किसान गन्ने की पेराई के लिए कोल्हू लगाते हैं। कोल्हू लगाने के लिए हर वर्ष परमिट की व्यवस्था किए जाने से किसान परेशान हैं। उन्होंने कहा कि सरकार कोल्हू संचालकों को परेशान कर रही है। वहीं, विद्युत विभाग की ओर से लगाए जा रहे स्मार्ट मीटर का भी किसान विरोध करेंगे।

इस दौरान जनक प्रधान, सोहनवीर, अर्जुन, निशांत कुमार, मेहर सिंह, राजवीर और रोहित कुमार सहित 12 लोगों ने भाकियू टिकैत की सदस्यता ग्रहण की। इनके साथ आए अंकित लंबरदार को जिला उपाध्यक्ष बनाया गया।

बैठक में सतीश चौधरी, संजीव सैनी, कुलदीप सैनी, शिवम पवार, प्रदीप कुमार, वेदपाल, यशवीर सिंह और राजपाल सिंह सहित अन्य किसान मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री धामी ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों की समस्याएं सुनीं

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। जनसुनवाई के दौरान प्रदेश के अलग-अलग जिलों से पहुंचे लोगों ने अपनी समस्याओं से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने लोगों की समस्याओं को एक-एक कर सुना और संबंधित प्रकरणों की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि और सरकार के बीच आमजन का सीधा संवाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाता है। जनसुनवाई के माध्यम से लोगों को अपनी बात सीधे सरकार तक पहुंचाने का अवसर मिलता है और विभिन्न स्तरों पर लंबित मामलों के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात करते उत्तरकाशी के सामाजिक कार्यकर्ता व गंगा विचार मंच (नमामि गंगे, उत्तराखंड) के प्रांतीय/प्रदेश संयोजक लोकेंद्र सिंह बिष्ट।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता प्रदेश के प्रत्येक नागरिक तक सुशासन का लाभ पहुंचाना है। सरकार की योजनाओं और नीतियों का प्रभाव तभी सार्थक होगा, जब उनका लाभ जरूरतमंद व्यक्ति तक समय पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि संबंधित विभागों को भेजकर इन पर यथाशीघ्र कार्यवाही की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार जनभावनाओं और जनअपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करते हुए प्रदेश के समग्र विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने अधिकारियों से अपेक्षा की कि आमजन से जुड़े मामलों में मानवीय दृष्टिकोण के साथ नियमों के अनुरूप समाधान सुनिश्चित किया जाए।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर.के. सुधांशु, सचिव शैलेश बगोली, आयुक्त गढ़वाल श्री आनंद स्वरूप, आईजी गढ़वाल राजीव स्वरूप, अपर सचिव जे.सी. काण्डपाल सहित मुख्यमंत्री कार्यालय के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

करोड़ों का 'ढोंग' जिंदगी 'डोली' में..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

कोई सरकारी एंबुलेंस नहीं होती। कोई सायरन नहीं होता। कोई मेडिकल टीम नहीं होती। सिर्फ एक आदमी होता है जिसे बचाना है और चार-पांच लोग होते हैं जो उसे बचाने के लिए अपना कंधा दे रहे होते हैं।

यही उत्तराखंड की सबसे मार्मिक तस्वीर है। जिस पहाड़ ने देश को सैनिक दिए, श्रमिक दिए, पर्यटन दिया, नदियां दीं, पानी दिया वही पहाड़ आज भी अपने बीमार और घायल लोगों को अस्पताल तक पहुंचाने के लिए अपने लोगों के कंधों पर निर्भर है। चुनाव आते हैं तो पहाड़ के लिए बड़े-बड़े वादे होते हैं। पलायन रोकेंगे। सड़क देंगे। स्वास्थ्य सुधारेंगे। गांवों को आधुनिक बनाएंगे। लेकिन किसी नेता से यह सवाल भी पूछा जाना चाहिए क्या आपके विकास माडल में वह गांव शामिल है जहां आज भी मरीज को डोली में अस्पताल ले जाना पड़ता है? क्या विकास की सफलता किलोमीटर सड़क से मापी जाएगी या इस बात से कि आपातकाल में एंबुलेंस कितने मिनट में मरीज तक पहुंचती है? क्या स्वास्थ्य व्यवस्था की सफलता अस्पतालों की इमारतों से तय होगी या इस बात से कि किसी पहाड़ी मां को अपने बेटे को डोली में लादकर कितनी दूर नहीं चलना पड़ा? यही असली कसौटी है।

हर बार जब ऐसी तस्वीर सामने आती है तो सोशल मीडिया पर लोग दुख जताते हैं। उत्तराखंड की असली तस्वीर। यह कैसी स्वास्थ्य व्यवस्था? सरकार कब जागेगी? फिर कुछ दिन बाद दूसरी खबर आ जाती है। लेकिन डोली वहीं रहती है। पगडंडी वहीं रहती है। दूर अस्पताल वहीं रहता है और अगला मरीज भी शायद उसी रास्ते से जाएगा। इसलिए सवाल सिर्फ सरकार से नहीं, पूरे समाज और व्यवस्था से है। क्यों हम उस तस्वीर को सामान्य मान बैठे हैं जिसमें चार इंसान पांचवें इंसान को कंधे पर उठाकर अस्पताल ले जा रहे हैं? डोली पहाड़ की परंपरा हो सकती है। लेकिन आपातकालीन स्वास्थ्य व्यवस्था का विकल्प नहीं। जिस दिन पहाड़ के किसी गांव में घायल को डोली की जरूरत नहीं पड़ेगी, उस दिन शायद हम कह सकेंगे कि विकास सचमुच गांव तक पहुंचा है। उस दिन सड़क सिर्फ कागज पर नहीं होगी। अस्पताल सिर्फ भवन नहीं होगा और एंबुलेंस सिर्फ सरकारी वाहन नहीं होगी। वह सचमुच मरीज तक पहुंचेगी।

तब पहाड़ का कंधा फिर घास की गठरी उठाएगा, लकड़ी उठाएगा, बच्चे को स्कूल पहुंचाएगा। लेकिन किसी मरीज की जिंदगी को अस्पताल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी उसे अपने कंधे पर नहीं उठानी पड़ेगी। यही वह दिन होना चाहिए जिसे उत्तराखंड विकास का असली प्रमाण माने।

दुपहिया वाहन चोर गिरोह का खुलासा, दो शातिर गिरफ्तार, चुराये गये 13 दुपहिया वाहन बरामद

हमारे संवाददाता

देहरादून। दुपहिया वाहन चोर गिरोह का खुलासा करते हुए पुलिस ने दो शातिरों को गिरफ्तार कर लिया है। जिनके पास से चुराये गये 7 बुलेट मोटरसाइकल सहित 13 दुपहिया वाहन बरामद हुए है। आरोपी पुलिस से बचने के लिये घटना के बाद वाहनों की नम्बर प्लेट हटाकर गली मोहल्लों के रास्ते फरार हो जाते थे।

जानकारी के अनुसार बीते दिनों आदित्य पुत्र विरेन्द्र निवासी चन्द्रबनी चोयला पटेलनगर देहरादून द्वारा अपनी बुलेट रॉयल इनफिल्ड तथा दीपक सिंघल निवासी शक्ति विहार माजरा देहरादून द्वारा अपनी बुलट रॉयल इनफील्ड के चोरी होने के सम्बन्ध कोतवाली पटेलनगर में मुकदमा दर्ज कराया गया था। जिस पर पुलिस ने चोरो की तलाश शुरू कर दी गयी। चोरो की तलाश में जुटी पुलिस टीमों द्वारा घटना स्थलों का निरीक्षण कर आस-पास आने जाने वाले मार्गों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेजों का अवलोकन किया गया। साथ ही पूर्व में वाहन चोरी की घटनाओं में प्रकाश में आये आरोपियों की अध्यतन स्थिती की जानकारी कर उनका भौतिक सत्यापन किया गया। पुलिस द्वारा लगातार किये जा रहे प्रयासों से बीते रोज एक सूचना के बाद चलाये गये चैकिंग अभियान के दौरान हरिद्वार बाईपास रोड कबाडी बाजार के पास नव निर्मित सडक से वाहन चोरी की घटनाओ में शामिल दो आरोपियों को चोरी की 2 बुलेट मोटर साईकिलो के साथ गिरफ्तार किया गया। जिन्होने पूछताछ में अपना नाम विवेक सिंह विश्नोई पुत्र धनवीर सिंह विश्नोई निवासी निकट लखेड़ा टैंट हाउस, श्यामपुर कांगड़ी, थाना श्यामपुर, जिला हरिद्वार व गुरप्रीत सिंह पुत्र कुलवंत सिंह निवासी ग्राम टाटवाला श्यामपुर कांगड़ी, थाना श्यामपुर, जिला हरिद्वार बताया। आरोपियों द्वारा देहरादून के अलग-अलग स्थानों से अन्य बुलेट मोटर साईकिलें व दोपहिया वाहनों को चोरी करना स्वीकार किया गया। जिनकी निशानदेही पर पुलिस द्वारा 5 अन्य रॉयल इनफील्ड बुलट मोटर साईकिल सहित चोरी के कुल 13 दो पहिया वाहन बरामद किये गये। आरोपियों द्वारा चोरी के 2 अन्य दो पहिया वाहनों, जिसमें 1 रॉयल इनफील्ड मोटर साईकिल के थाना श्यामपुर हरिद्वार व 1 अन्य वाहन के पानीपत हरियाणा में पुलिस द्वारा सीज किये जाने की जानकारी दी गई, जिनकी बरामदगी हेतु टीम रवाना की गई है। आरोपियों ने बताया कि उनके द्वारा योजना बनाकर अलग-अलग स्थानों पर घूमते हुए सुनसान जगहों पर खडे दो पहिया वाहनों को चिन्हित किया जाता है तथा मौका देखकर वहां चोरी की घटनाओ को अंजाम दिया जाता है। घटना के बाद पुलिस को गुमराह करने के लिये आरोपी चोरी के वाहनों से नम्बर प्लेट को हटाकर उन्हें गली-मोहल्लों के बीच से ले जाते हुए पूर्व में चिन्हित किये गये स्थान पर खडा कर देते थे तथा सही ग्राहक मिलने पर वाहनों को उन्हें बेच देते थे। अपने खर्चों की पूर्ति के लिये आरोपियों द्वारा वाहनों की नम्बर प्लेट हटाकर उन्हें अपनी पहचान के लोगों को किराये पर भी दिया जाता था। आरोपियों की योजना चोरी के उक्त सभी वाहनों को बाहर ले जाकर बेचने की थी , जिसके लिये वे ग्राहकों की तलाश कर रहे थे।

हर-हर महादेव के जयघोष के साथ शिव मय हुआ दून

संवाददाता

देहरादून। हर-हर महादेव के जयघोष के साथ दून का वातावरण शिव मय हो गया। यहां सावन के दूसरे सोमवार पर टपकेश्वर महादेव मंदिर में बडी संख्या में श्रद्धालुओं ने जलाभिषेक किया इस दौरान भगवान शिव के दर्शन करने शिव भक्त पहुंचे। भक्तों ने गंगाजल, दूध, दही, शहद और बेलपत्र शिवलिंग पर चढाए। साथ ही मंदिर को फूलों से सजाया गया और भगवान भोलेनाथ की श्रृगांर आरती की गयी। इसके अलावा कई मंदिरों में हवन और महामृत्यंजय का जाप भी किया गया। जिससे पूरा वातावरण शिव मय हो गया।

स्व. हीरा सिंह बिष्ट को इंटक सहित विभिन्न मजदूर संगठनों ने दी श्रद्धांजलि

हमारे संवाददाता

देहरादून। राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री वरिष्ठ श्रमिक नेता स्व. हीरा सिंह बिष्ट के निधन पर कांग्रेस भवन देहरादून में विभिन्न मजदूर संगठनों एवं कांग्रेस के लोगों द्वारा श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्रद्धांजलि सभा में इंटक, सीटू व एटक सहित विभिन्न श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं मजदूर नेताओं ने स्व. हीरा सिंह बिष्ट के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि स्व. हीरा सिंह बिष्ट ने अपने लंबे सार्वजनिक एवं श्रमिक जीवन में मजदूरों के अधिकारों उनके हितों और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर संघर्ष किया। उन्होंने श्रमिकों को संगठित करने उनके अधिकारों की आवाज को मजबूती से उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उनका निधन श्रमिक आंदोलन और समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है सभा में उपस्थित श्रमिक नेताओं ने कहा कि स्व. हीरा सिंह बिष्ट के संघर्ष सादगी और मजदूर हितों के प्रति समर्पण को हमेशा याद किया जाएगा। उनके विचार और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहेंगे। इस अवसर पर इंटक, सीटू व एटक तथा अन्य मजदूर संगठनों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और सभी ने 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। प्रदेश कार्यालय प्रभारी इंटक विक्टर थॉमस ने बताया कि शोक सभा में पहुंचकर स्व. हीरा सिंह बिष्ट की सुपुत्री विभा बिष्ट, भतीजे अनूप विश्व ने भी श्रद्धांजलि दी। इस शोक सभा में ए.पी अमोली, वीरेंद्र नेगी, अनिल कुमार, राजवीर सिंह, पंकज छेत्री, तनवीर आलम, विक्टर थॉमस, अभिनव बिष्ट, वीरेंद्र नेगी, बलेश कुमार, अजय शर्मा सहित कई लोग मौजूद रहे।

लोगों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता: धामी

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने तमकनाला आपदा पर मॉनिटरिंग करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिये कि लोगों की सुरक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

आज यहां चमोली जनपद के ज्योतिर्मठ-मलारी मोटर मार्ग पर तमकनाला में बेली ब्रिज बहने की घटना के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी पूरे घटनाक्रम की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी चमोली एवं गढ़वाल मंडल आयुक्त से स्थिति की जानकारी लेते हुए राहत-बचाव, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति और कनेक्टिविटी बहाली को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रभावित क्षेत्रों में राशन, खाद्य सामग्री, दवाइयों एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति किसी भी स्थिति में बाधित नहीं होनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर वैकल्पिक मार्गों एवं अन्य उपलब्ध माध्यमों से ग्रामीणों तक जरूरी सामग्री पहुंचाना सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री ने ज्योतिर्मठ-मलारी मोटर मार्ग पर आवाजाही को जल्द से जल्द बहाल करने के लिए सभी संभावित विकल्पों पर तत्काल कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को ग्राउंड

◆तमकनाला आपदा की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं सीएम

जीरो पर पहुंचकर वास्तविक स्थिति एवं नुकसान का स्वयं आकलन करने को कहा, ताकि राहत और पुनर्व्यवस्था से जुड़े कार्यों में किसी प्रकार की देरी न हो। बदलते मौसम और बढ़ते जलप्रवाह को देखते हुए मुख्यमंत्री ने निचले क्षेत्रों तथा नदी-नालों के आसपास विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि लोगों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। संवेदनशील क्षेत्रों की लगातार निगरानी की जाए और आवश्यकता पड़ने पर लोगों को तत्काल सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की पूरी तैयारी रखी जाए। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र से भी चमोली सहित प्रदेश के सभी संवेदनशील क्षेत्रों पर 24 घंटे नजर रखी जा रही है। जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागों के साथ लगातार समन्वय किया जा रहा है, ताकि किसी भी आपात स्थिति में राहत एवं बचाव दलों को तत्काल सक्रिय किया जा सके। सोमवार को चमोली जनपद के ज्योतिर्मठ-मलारी मोटर मार्ग पर तमकनाला में अचानक अत्यधिक जलप्रवाह बढ़ने के कारण 123 बीआरटीएफ, सुराईथोटा द्वारा निर्मित बेली ब्रिज बह गया था। तेज बहाव की चपेट में एक व्यक्ति और एक कैंपर वाहन के बहने की सूचना भी प्राप्त हुई थी। घटना की सूचना मिलते ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने तत्काल संज्ञान लेते हुए सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास से पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली और राहत-बचाव कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। एसडीआरएफ एवं एनडीआरएफ की टीमों को तत्काल घटनास्थल के लिए रवाना किया गया। स्थानीय प्रशासन, पुलिस एवं संबंधित विभागों की टीमें भी मौके पर राहत एवं बचाव कार्यों में जुटी हैं। तमकनाला की घटना के बाद सरकार की प्राथमिकता केवल राहत एवं बचाव कार्यों तक सीमित नहीं है। प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति, वैकल्पिक कनेक्टिविटी और आवाजाही की शीघ्र बहाली पर भी समान रूप से काम किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री धामी की लगातार मॉनिटरिंग और अधिकारियों को ग्राउंड जीरो पर पहुंचकर त्वरित निर्णय लेने के निर्देश राज्य सरकार की प्रो-एक्टिव आपदा प्रबंधन नीति को दर्शाते हैं। प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता, लेकिन समय पर सतर्कता, बेहतर समन्वय और त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई से उनके प्रभाव को कम किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया है कि कठिन परिस्थितियों में प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ प्रभावित क्षेत्रों में जल्द से जल्द सामान्य स्थिति बहाल करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

सोशल मीडिया में आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर मुकदमा

संवाददाता

देहरादून। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनका पोस्ट करने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार श्यामपुर निवासी गोविन्द सिंह चौहान ने ऋषिकेश कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसके द्वारा सोशल मीडिया पर एक पोस्ट डाली गई थी, जिसमें कुछ व्यक्तियों द्वारा स्वयं को किंग ऑफ उत्तराखंड लिखे जाने के सदर्भ में अपने विचार रखे गए थे। उसने अपनी पोस्ट में यह उल्लेख किया था कि असली किंग वीर जवान है जिन्होंने देश और उत्तराखंड के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया है तथा जन्मू कश्मीर में देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए हैं। उक्त पोस्ट के उपरांत, उपाध्याय दीपेश नाम की सोशल मीडिया प्रोफाइल से उसको डराने-धमकाने के उद्देश्य से आपत्तिजनक एवं धमकी भरा संदेश भेजा गया। इसकी भरा संदेश तेरे अन्दर ज्यादा गर्मी है तो आ जा बता कहां मिलेगा, इस प्रकार के धमकी भरे संदेश प्राप्त होने से वह एवं उसका परिवार अत्यत भयभीत व मानसिक रूप से परेशान है। उक्त व्यक्ति द्वारा भविष्य में उसके साथ किसी भी प्रकार की अनहोनी, मारपीट या अप्रिय घटना घटित की जा सकती है।

दूध लेकर लौट रही महिला को हाथी ने पटक कर मार डाला

हमारे संवाददाता

देहरादून। राज्य में वन्य जीवो का आंतक थमने का नाम नही ले रहा है। देहरादून के थानों क्षेत्र में हाथियों की दहशत एक बार फिर बीती शाम को भी देखी गयी। बड़ासी ग्रांट में दूध लेने गई एक महिला को हाथी ने पटक कर बुरी तरह घायल कर दिया, अस्पताल में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार बीती शाम करीब 7 बजे बड़ासी ग्रांट में 37 वर्षीय अंजली गुप्ता दूध लेकर घर लौट रही थी। इसी दौरान जंगली हाथी ने महिला पर हमला कर दिया जिसमें वह गम्भीर रूप से घायल हो गयी। गंभीर हालत में महिला को सीएमआई अस्पताल लाया गया, जहां कुछ देर बाद महिला ने दम तोड़ दिया। महिला की मौत के बाद क्षेत्र में शोक के साथ ग्रामीणों का गुस्सा भी बढ़ गया है। ग्रामीणों का कहना है कि थानों क्षेत्र के जंगल से सटे गांवों में लंबे समय से हाथियों की आवाजाही बनी हुई है। इसके बावजूद सुरक्षा के स्थायी इंतजाम नहीं किए जा रहे हैं। ग्रामीणों के मुताबिक, 15 जनवरी को थानों में आयोजित बहुउद्देशीय शिविर में भी सोलर फेंसिंग की मांग उठाई गई थी, लेकिन अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई। घटना से पहले दिन में सौड़ा सरोली के खेतों में भी हाथी दिखाई दिया था।

लोकगायक के खिलाफ युवती ने दर्ज कराया मुकदमा

हमारे संवाददाता

देहरूदन। कोतवाली विकासनगर क्षेत्र में एक युवती ने लोक गायक डब्ल्यू आर्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। युवती ने आरोप लगाया है कि लोक गायक ने उसे बदनाम करने के उद्देश्य से उसके नाम से गीत बनाए और मानसिक रूप से परेशान करने के साथ धमकी भी दी।

पुलिस के अनुसार, युवती ने तहरीर में आरोप लगाया कि 3 अप्रैल को जौनसार क्षेत्र के एक लोक गायक के खिलाफ दुष्कर्म और धमकी देने के आरोप में कालसी कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया गया था। इसके बाद लोक गायक ने गिरफ्तारी से बचने के लिए हाईकोर्ट की शरण ली थी। युवती के अनुसार, हाईकोर्ट ने लोक गायक को इंटरनेट मीडिया पर इस मामले से संबंधित किसी भी तरह की टिप्पणी नहीं करने का आदेश दिया था। आरोप है कि इसके

बावजूद लोक गायक ने युवती और उसके परिवार को मानसिक रूप से परेशान करना शुरू कर दिया।

युवती ने आरोप लगाया कि उस पर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाया जा रहा है। साथ ही उसे बदनाम करने के लिए जौनसारी गीत तैयार किए गए हैं। आरोप है कि इन गीतों के माध्यम से युवती को निशाना बनाया जा रहा है। तहरीर में यह भी आरोप लगाया गया है कि लोक गायक अश्लील गीतों को युवती के पिता और रिश्तेदारों को व्हाट्सऐप के माध्यम से भेजता रहा। 24 जुलाई को भी पीड़िता के पिता को धमकी भरा संदेश भेजे जाने का आरोप लगाया गया है। युवती की शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले से जुड़े आरोपों और साक्ष्यों की जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

रातभर बारिश से यमुनोत्री हाईवे कई जगह बाधित

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। उत्तरकाशी में बीती रात से आज सुबह तक कई क्षेत्रों में बारिश का दौर जारी रहा। जिला आपातकालीन परिचालन केंद्र की ओर से आज सुबह 8 बजे जारी रिपोर्ट के अनुसार जिला मुख्यालय में सर्वाधिक 53 मिमी बारिश दर्ज की गई। इसके अलावा मोरी में 42 मिमी, बड़कोट में 26 मिमी, भटवाड़ी में 23 मिमी, चिन्यालीसौड़ और पुरोला में 20-20 मिमी तथा डुण्डा में 10 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई।

बारिश के बीच जिले की प्रमुख नदियों के जलस्तर पर भी प्रशासन की नजर बनी हुई है। सुबह 8 बजे के आंकड़ों के अनुसार टौंस नदी मोरी में 1266.71 मीटर पर बह रही थी, जबकि इसका चेतावनी स्तर 1267 मीटर है। यानी नदी चेतावनी स्तर से महज 0.29 मीटर नीचे है। इसी तरह यमुना नदी नौगांव में 1058.95 मीटर दर्ज की गई, जो 1059 मीटर के चेतावनी स्तर से महज 0.05 मीटर नीचे है। कुथनौर में यमुना का जलस्तर 1427.32 मीटर दर्ज हुआ। भागीरथी नदी का जलस्तर तिलोथ पुल पर 1120.80 मीटर रहा, जबकि चेतावनी स्तर 1122 मीटर है। हर्षिल में भागीरथी 2492.71 मीटर पर दर्ज की गई। पुरोला में कमल नदी का जलस्तर 1196.90 मीटर रहा।

❑टौंस और यमुना नदी चेतावनी स्तर के करीब

बारिश के कारण यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर पालीगाड, सिलाई बैंड, दुर्बिल और बनास के पास मलबा एवं पत्थर आने से यातायात बाधित है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण की टीम द्वारा मार्ग खोलने की कार्रवाई की जा रही है। वहीं गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात सुचारू बताया गया है। फिलहाल जनपद में किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं है और स्थिति सामान्य है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।